सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुअ्मिनून

मोमिनीन

पूरा सफ़र — वो जो कामयाब हो गए —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 23 • 118 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

क़द अफ़्लहल्-मुअ्मिनून
1. बेशक मोमिन कामयाब हो गए।

अल्लज़ीन हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशि'ऊन
2. वो जो अपनी नमाज़ में आजिज़ी करने वाले हैं।

फ़-तबारकल्-लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन
14. तो बरकत वाला है अल्लाह, सब से बेहतर बनाने वाला।

व क़ुर्-रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम्-मुबारकंव्-व अन्त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन
29. और कहो: मेरे रब, मुझे एक बा-बरकत जगह उतार, और तू सब से बेहतर उतारने वाला है।

हत्ता इज़ा जा-अ अहदहुमुल्-मौतु क़ाल रब्बिर्-जि'ऊन
99. यहाँ तक कि जब उन में से किसी को मौत आती है, वो कहता है: मेरे रब, मुझे वापस भेज दे।

व क़ुर्-रब्बिग़्-फ़िर वर्हम व अन्त ख़ैरुर्-राहिमीन
118. और कहो: मेरे रब, बख़्श दे और रहम कर, और तू सब से बेहतर रहम करने वाला है।

बेशक मोमिन कामयाब हो गए

बेटा, ये सूरह एक एलान से खुलती है, एक सवाल से नहीं: **'क़द अफ़्लहल्-मुअ्मिनून — बेशक मोमिन कामयाब हो गए।'**

बेटा, 'अफ़्लह' **'फ़लाह'** से आता है — और ये अस्ल दरअस्ल ज़मीन को चीर कर खोलने से है, जैसे एक किसान करता है। तो 'फ़लाह' उस शख़्स की कामयाबी है जो काश्त करता है: वो मिट्टी तोड़ता, बोता है, सींचता, इंतेज़ार करता — और फिर कटाई करता है। **ये लॉटरी का जीतना नहीं; ये कमाई हुई कामयाबी है जो बढ़ती है।**

और उस से पहले **'क़द'** यक़ीन का लफ़्ज़ है: ये **हो** चुका, ये तय है, ज़मानत-शुदा।

और आता है कि जब ये सूरह नाज़िल हुई, नबी ﷺ ने फ़रमाया कि दस आयतें ऐसी

नाज़िल हुई हैं कि जो उन्हें पूरा करे वो जन्नत में दाख़िल होगा।

बेटा, तो ग़ौर से सुनिए। जो आगे आता है एक छोटी फ़ेहरिस्त है, और अल्लाह आपको बता रहे हैं: इन्हें पूरा करो, और तुम कामयाब हो गए। आओ एक एक कर के चलें।

'अल्लज़ीन हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशि'ऊन — वो जो अपनी नमाज़ में आजिज़ी करने वाले हैं।'

बेटा, **पहली** चीज़ ये नहीं कि वो नमाज़ पढ़ते हैं — ये है कि वो **कैसे** पढ़ते हैं। 'ख़ुशू' जिस्म की सुकून और दिल की मौजूदगी है: **एक ऐसा शख़्स जो जानता है कि वो किसके सामने खड़ा है।**

और अल्फ़ाज़ ग़ौर कीजिए: '**फ़ी** सलातिहिम' — अपनी नमाज़ **में**। सूरह इस फ़ेहरिस्त को नमाज़ का फिर ज़िक्र कर के ख़त्म करेगी, बाहर से; यहाँ ये उस बारे में है जो उस के **अंदर** होता है।

बेटा, ख़ुशू' पहली चीज़ है जो इस उम्मत से उठाई जाएगी, जैसे उलमा ने ख़बरदार किया। तो इसपर जान-बूझ कर काम करो: जानो तुम क्या पढ़ रहे हो, धीरे हो जाओ, याद रखो कि **वो तुम्हें देख रहा है जब तुम खड़े हो।**

'वल्-लज़ीन हुम 'अनिल्-लग़्वि मुअ्रिज़ून — और वो जो लग़्व से मुँह मोड़ लेते हैं।'

बेटा, '**लग़्व**' हर फ़ुज़ूल और बे-मक़्सद चीज़ है — वो बात जिसका कोई फ़ायदा नहीं, वो तफ़रीह जो कहीं नहीं ले जाती, वो बहसें जो कुछ पैदा नहीं करतीं, वो घंटे जो भाप बन जाते हैं। **ये ज़रूरी नहीं कि गुनाह हो; ये ख़ाली है।**

और ग़ौर कीजिए: वो सिर्फ़ इसे नहीं छोड़ते — वो 'मुअ्रिज़ून', वो उस से **मुँह मोड़** लेते हैं, जान-बूझ कर, जिस तरह आप अपना चेहरा किसी ऐसी चीज़ से फेर लेते हैं जो आप नहीं चाहते।

बेटा, हमारे दौर में ये फ़ेहरिस्त की सब से मुश्किल चीज़ है। लग़्व अब जेब तक पहुँचाया जाता है, बे-इंतिहा, माहिराना तौर पर आपको रोके रखने के लिए बनाया गया। **एक मोमिन की कामयाबी कुछ हद तक इसी से नापी जाती है कि वो क्या**

स्क्रॉल कर के आगे गुज़र जाता है।

'**वल्-लज़ीन हुम लिज़्-ज़कात फ़्रा'इलून — और वो जो ज़कात अदा करने वाले हैं।**' उनकी दौलत बंद नहीं; ये बाहर की तरफ़ बहती है।

'**वल्-लज़ीन हुम लि-फ़ुरूजिहिम हाफ़िज़ून — और वो जो अपनी पाक-दामनी की हिफ़ाज़त करते हैं**' — सिवाए अपनी बीवियों के। बेटा, एक ऐसी दुनिया में पाकीज़गी जो उसे घिसाने के लिए बनाई गई है।

'**वल्-लज़ीन हुम लि-अमानातिहिम व 'अह्दिहिम रा'ऊन — और वो जो अपनी अमानतों और अपने वादों पर निगहबान हैं।**'

बेटा, लफ़्ज़ 'रा'ऊन' 'रा'ई' से है — एक **चरवाहा**। वो सिर्फ़ अपनी अमानतें नहीं रखते; वो उनकी देखभाल करते, उनकी हिफ़ाज़त करते, उन पर यूँ निगरानी करते हैं जिस तरह एक चरवाहा रात भर अपने रेवड़ पर नज़र रखता है।

और 'अमानह' हर वो चीज़ है जो तुम्हारी निगरानी में रखी जाए: एक उधार ली गई चीज़, एक राज़ जो तुम्हें बताया गया, एक नौकरी जिसके लिए तुम रखे गए, एक ओहदा, तुम्हारे बच्चे, तुम्हारा जिस्म, तुम्हारा इल्म। बेटा, नबी ﷺ ने फ़रमाया: उसका कोई ईमान नहीं जिसमें अमानतदारी नहीं, और उसका कोई दीन नहीं जो अपना अह्द पूरा नहीं करता।

'**वल्-लज़ीन हुम 'अला सलवातिहिम युहाफ़िज़ून — और वो जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: फ़ेहरिस्त नमाज़ से **खुली** और अब नमाज़ पर **ख़त्म** होती है। ये अंदर से शुरू हुई — ख़ुशू' — और बाहर पर ख़त्म होती है: उनकी हिफ़ाज़त करते, उनके वक़्तों पर, पाबंदी से, कभी न छोड़ते हुए।

बेटा, **नमाज़ पूरी फ़ेहरिस्त के गिर्द की बाड़ है।**

'**उलाइक हुमुल्-वारिसून — वही वारिस हैं — अल्लज़ीन यरिसूनल्-फ़िर्दौस हुम फ़ीहा ख़ालिदून** — जो **फ़िरदौस** के वारिस होंगे; उस में हमेशा रहेंगे।'

बेटा, अल-फ़िरदौस जन्नत का सब से ऊँचा हिस्सा है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: जब तुम अल्लाह से माँगो, तो उस से अल-फ़िरदौस माँगो, क्योंकि ये जन्नत का दरमियानी और सब से ऊँचा हिस्सा है, और उसके ऊपर रहमान का अर्श है, और उस से जन्नत की नहरें फूटती हैं।

तो ये सौदा है, बेटा: वो दस लाइन, सब से ऊँची जगह के बदले जो मौजूद है।

बरकत वाला है अल्लाह, सब से बेहतर बनाने वाला

फिर सूरह इस तरफ़ मुड़ती है कि तुम कैसे बनाए गए — और बेटा, चौदह सदी पहले नाज़िल हुई एक किताब के लिए ये बयान हैरत-अंगेज़ है:

'**व लक़द ख़लक़्नल्-इंसान मिन सुलालतिम्-मिन तीन** — और हमने यक़ीनन इंसान को मिट्टी के एक **निचोड़** से बनाया — **सुम्म ज'अल्नाहु नुत्फ़तन फ़ी क़रारिम्-मकीन** — फिर हमने उसे एक **मज़बूत ठिकाने** में एक **बूँद** बनाया — **सुम्म ख़लक़्नन्-नुत्फ़त 'अलक़ह** — फिर हमने उस बूँद को एक **लटकती हुई** चीज़ बनाया — **फ़-ख़लक़्नल्-'अलक़त मुज़्ग़ह** — और लटकती चीज़ को एक चबाई हुई जैसी **बोटी** बनाया — **फ़-ख़लक़्नल्-मुज़्ग़त 'इज़ामा** — और बोटी को **हड्डियाँ** बनाया — **फ़-कसौनल्-'इज़ाम लह्मा** — और हमने **हड्डियों को गोश्त का लिबास पहनाया** — **सुम्म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न आख़र** — **फिर हमने उसे एक दूसरी ही तख़्लीक़ बना दिया।**'

बेटा, तरतीब ग़ौर कीजिए: हड्डियाँ पहले, फिर गोश्त उन्हें पहनाता हुआ। और आख़िरी जुमला ग़ौर कीजिए — 'ख़ल्क़न आख़र', एक बिल्कुल **दूसरी** तख़्लीक़। किसी मुक़ाम पर ये बढ़ता हुआ जिस्म एक **कोई** बन जाता है: एक रूह, एक शख़्स, एक नफ़्स।

'**फ़-तबारकल्-लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन — तो बरकत वाला है अल्लाह, सब से बेहतर बनाने वाला।**'

बेटा, एक मशहूर रिवायत है कि एक सहाबी, इस हिस्से को नाज़िल होते सुनते हुए, हैरत से ठीक यही अल्फ़ाज़ उस से पहले बोला जब वो पूरा हुआ — और फिर आयत

ठीक वैसे ही उतरी जैसे उसने कहे थे।

'**सुम्म इन्नकुम ब'अ्द ज़ालिक ल-मय्यितून** — फिर बेशक, उस के बाद, **तुम मरोगे** — **सुम्म इन्नकुम यौमल्-क़ियामति तुब्'असून** — फिर बेशक तुम, क़ियामत के दिन, **उठाए जाओगे।**'

बेटा, पाँच आयतों में: मिट्टी, बूँद, मरहले, ज़िंदगी, मौत, और दोबारा उठना। **तुम्हारा पूरा वुजूद नक़्शा बना दिया गया।**

एक बा-बरकत उतरने की जगह

फिर सूरह नूह (अलैहि0) और तूफ़ान का ज़िक्र करती है, और ये दो दुआएँ महफ़ूज़ करती है जिन्हें आप अपने साथ रखें, बेटा।

जब वो मोमिनीन के साथ कश्ती पर सवार हुए, उन्हें सिखाया गया कि वो कहें: '**अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी नज्जाना मिनल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन** — **तारीफ़ अल्लाह के लिए जिसने हमें ज़ालिम क़ौम से बचाया।**'

और फिर: '**व क़ुर्-रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम्-मुबारकंव्-व अन्त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन** — **और कहो: मेरे रब, मुझे एक बा-बरकत जगह उतार, और तू सब से बेहतर ठहराने वाला है।**'

बेटा, ये सफ़र के लिए, घर बदलने के लिए, कहीं भी नए पहुँचने के लिए एक ख़ूबसूरत दुआ है — एक नई नौकरी, एक नए शहर, ज़िंदगी के एक नए मरहले के लिए। **वो एक डूबती दुनिया में एक कश्ती पर है और वो सिर्फ़ बच जाने को नहीं माँगता, बल्कि उस जगह को बा-बरकत होने को माँगता है जहाँ वो पहुँचता है।**

बेटा, इसे सीखिए। सिर्फ़ 'मुझे वहाँ सलामती से पहुँचा दे' नहीं — 'जहाँ मैं पहुँचूँ वो बा-बरकत हो'।

फिर सूरह नस्लों में से गुज़रती है — '**सुम्म अन्शअ्ना मिम्-ब'अ्दिहिम क़र्नन आख़रीन** — फिर हमने उनके बाद एक दूसरी नस्ल पैदा की' — और वही अंदाज़ दोहराया जाता दिखाती है: एक रसूल आता है, ख़ुशहाल सरदार इनकार करते हैं, वो

पकड़े जाते हैं।

और उन के बारे में एक लाइन, बेटा, जो हर तहज़ीब को बयान करती है: '**मा तस्बिक़ु मिन उम्मतिन अजलहा व मा यस्तअ्ख़िरून** — कोई क़ौम अपने मुक़र्रर वक़्त से **आगे** नहीं बढ़ सकती, न **पीछे** कर सकती।'

और एक तबाह-कुन ख़ुलासा: '**सुम्म अर्सल्ना रुसुलना तत्रा** — फिर हमने अपने रसूल **पय-दर-पय** भेजे — **कुल्लमा जा-अ उम्मतर्-रसूलुहा कज़्ज़बूह** — जब भी किसी क़ौम के पास उसका रसूल आया, **उन्होंने उसे झुठलाया** — **फ़-अत्बअ्ना ब'अ्ज़हुम ब'अ्ज़ंव्-व ज'अल्नाहुम अहादीस** — तो हमने उन्हें (तबाही में) एक दूसरे के पीछे लाया और उन्हें **कहानियाँ** बना दिया — **फ़-बुअ्दल्-लि-क़ौमिल्-ला युअ्मिनून** — तो दूर हों वो लोग जो ईमान नहीं लाते।'

बेटा, 'ज'अल्नाहुम अहादीस' — हमने उन्हें **कहानियाँ** बना दिया। **पूरी तहज़ीबें उस चीज़ तक सिमट गईं जिसके बारे में लोग पढ़ते हैं।**

बुराई को उस से रद्द करो जो बेहतर हो

फिर सूरह वाक़ई बा-शु'ऊर मोमिनीन का बयान करती है — और बेटा, ये हिस्सा अल्लाह के साथ एक सेहत-मंद रिश्ते की तस्वीर है:

'**इन्नल्-लज़ीन हुम मिन ख़श्यति रब्बिहिम मुश्फ़िक़ून** — बेशक, जो अपने रब के ख़ौफ़ से **डरते हैं** — **वल्-लज़ीन हुम बि-आयाति रब्बिहिम युअ्मिनून** — और जो अपने रब की निशानियों पर ईमान लाते हैं — **वल्-लज़ीन हुम बि-रब्बिहिम ला युश्रिकून** — और जो अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते — **वल्-लज़ीन युअ्तून मा अतौ व क़ुलूबुहुम वजिलतुन अन्नहुम इला रब्बिहिम राजि'ऊन** — **और जो देते हैं जो वो देते हैं जब कि उनके दिल काँप रहे होते हैं**, क्योंकि वो अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।'

बेटा, वो चौथा हैरत-अंगेज़ है। आइशा (रज़ि0) ने नबी ﷺ से पूछा कि क्या ये वो लोग हैं जो चोरी करते, शराब पीते, और अल्लाह से डरते हैं। आपने फ़रमाया नहीं — **ये वो हैं जो रोज़ा रखते और नमाज़ पढ़ते और सदक़ा देते हैं, और वो डरते हैं कि उन से ये**

क़ुबूल न किया जाए।

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। वो नेक अमल करते हैं, और फिर फ़िक्रमंद होते हैं कि क्या वो काफ़ी अच्छा था। वो सदक़ा देते और फिर डरते हैं कि उनकी नियत ना-पाक थी। **वो काँपना कमज़ोर ईमान नहीं — ये एक संजीदा दिल की निशानी है।** ये उस आदमी का उल्टा है जो दो नमाज़ पढ़ता और अल्लाह को अपना क़र्ज़दार समझता है।

'**उलाइक युसारि'ऊन फ़िल्-ख़ैराति व हुम लहा साबिक़ून — वही नेकियों में जल्दी करते हैं, और वही उन में आगे हैं।**'

और फिर एक रहमत: '**व ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन इल्ला वुस्'अहा — और हम किसी जान पर उसकी गुंजाइश से ज़्यादा बोझ नहीं डालते — व लदैना किताबंय्यन्तिक़ु बिल्-हक़्क़ि व हुम ला युज़्लमून** — और हमारे पास एक रिकॉर्ड है जो सच बोलता है, और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा।'

फिर सूरह दुश्मनी से निपटने की एक हिदायत देती है, बेटा: '**इद्फ़'अ बिल्लती हिय अह्सनुस्-सय्यि-अह — बुराई को उस से रद्द करो जो बेहतर हो — नह्नु अअ्लमु बिमा यसिफ़ून** — हम उस से ज़्यादा जानते हैं जो वो बयान करते हैं।'

और उसके फ़ौरन बाद, ये दुआ: '**व क़ुर्-रब्बि अ'ऊज़ु बिक मिन हमज़ातिश्-शयातीन** — और कहो: **मेरे रब, मैं शयातीन के उकसावों से तेरी पनाह माँगता हूँ — व अ'ऊज़ु बिक रब्बि अंय्यह्ज़ुरून — और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, मेरे रब, कि वो मेरे पास हाज़िर हों।**'

बेटा, पनाह के दो दर्जे ग़ौर कीजिए: उनके वस्वसों से, और उनकी महज़ **मौजूदगी** से। दोनों माँगो।

मुझे वापस भेज दे

और अब, बेटा, क़ुरआन के सब से होश में लाने वाले हिस्सों में से एक आता है — एक शख़्स के मौत पर आख़िरी अल्फ़ाज़।

'**हत्ता इज़ा जा-अ अहदहुमुल्-मौतु क़ाल रब्बिर्-जि'ऊन — यहाँ तक कि, जब उन में से किसी को मौत आती है, वो कहता है: मेरे रब, मुझे वापस भेज दे — ल'अल्ली अअ्मलु सालिहन फ़ीमा तरक्तु — ताकि मैं उस में नेक अमल करूँ जो मैंने छोड़ दिया।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: 'इर्जि'ऊन' — मुझे **वापस** भेज, इल्तिजा और गिड़गिड़ाहट की जमा शक्ल में। और ग़ौर कीजिए वो किस लिए वापस जाना माँगता है: और दौलत के लिए नहीं, अपने मंसूबे पूरे करने को नहीं, अपने ख़ानदान को एक बार और देखने को नहीं। **नेक अमल करने को।**

बेटा, यही वो है जो आख़िर में क़ीमती लगेगा। और हम में से हर एक को ठीक वही दिया गया है जिसकी वो भीक माँग रहा है: **वक़्त।** वो एक और दिन चाहता है। तुम्हारे पास एक है, अभी।

'**कल्ला — हरगिज़ नहीं! — इन्नहा कलिमतुन हुव क़ाइलुहा** — ये तो बस एक लफ़्ज़ है जो वो कह रहा है — **व मिंव्-वरा-इहिम बर्ज़ख़ुन इला यौमि युब्'असून — और उनके पीछे एक बरज़ख़ है उस दिन तक जब वो उठाए जाएँगे।**'

बेटा, '**बरज़ख़**' एक आड़ या दीवार है — मौत और दोबारा उठने के दरमियान की हालत। और ये लफ़्ज़ कहता है कि उस में से वापस आना नहीं। **ये एक-तरफ़ा दरवाज़ा है।**

और फिर ख़ुद वो दिन: '**फ़-इज़ा नुफ़िख़ फ़िस्-सूरि फ़-ला अन्साब बैनहुम यौम-इज़िंव्-व ला यतसा-अलून** — और जब सूर फूँका जाएगा, **उस दिन उनके दरमियान कोई रिश्ते न होंगे, न वो एक दूसरे को पूछेंगे।**'

बेटा, 'ला अन्साब बैनहुम' — कोई ख़ानदानी रिश्ते नहीं। ख़ानदानी नाम, ज़ातें, क़बीले, 'किसके बेटे हो' — सब कुछ पिघल जाता है। और 'व ला यतसा-अलून' — वो एक दूसरे का हाल तक न पूछेंगे, क्योंकि हर शख़्स पूरी तरह अपने आप में मशग़ूल होगा।

'**फ़-मन सक़ुलत मवाज़ीनुहू फ़-उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून** — तो जिनके तराज़ू भारी होंगे — **वही कामयाब** हैं।'

बेटा, लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: 'अल-मुफ़्लिहून' — 'फ़लाह' से, वही लफ़्ज़ जिस से सूरह खुली। **सूरह 'क़द अफ़्लहल्-मुअ्मिनून' से शुरू हुई और यहाँ आपको बताती है कि वो कामयाबी उस दिन कैसे नापी जाती है जब उसका हिसाब होता है।**

क्या तुमने समझा कि तुम बे-मक़्सद बनाए गए?

और अब, बेटा, सूरह अपने इख़्तिताम की तरफ़ एक ऐसे सवाल के साथ बढ़ती है जिसका हर इंसान को जवाब देना है:

'**अ फ़-हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्नाकुम 'अबसंव्-व अन्नकुम इलैना ला तुर्जऊन — क्या तुमने समझा कि हमने तुम सब को बे-कार बनाया — बे-मक़्सद — और ये कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे?**'

बेटा, "अबसन' का मतलब बे-फ़ायदा, खेल के तौर पर, बिना मक़्सद — जिस तरह एक बच्चा बिना किसी वजह के लकीरें खींचता है।

और ये सवाल इस पर निशाना है कि लोग कैसे **जीते** हैं, उस पर नहीं जो वो कहते हैं। कोई एलान नहीं करता 'मैं मानता हूँ मेरा वुजूद बे-मक़्सद है'। मगर **एक ज़िंदगी जो पूरी तरह खाने, कमाने, तफ़रीह और सोने पर ख़र्च हो एक ऐसी ज़िंदगी है जो यूँ जी गई जैसे जवाब हाँ हो।**

'**फ़-त'आलल्-लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़** — **तो बुलंद है अल्लाह, बादशाह, हक़** — **ला इलाह इल्ला हुव रब्बुल्-'अर्शिल्-करीम** — उसके सिवा कोई माबूद नहीं, मो'अज़्ज़ज़ अर्श का रब।'

और सूरह की आख़िरी हिदायत, बेटा, एक दुआ है जो अल्लाह ख़ुद अपने रसूल ﷺ को कहना सिखाते हैं:

'**व क़ुर्-रब्बिग़्फ़िर वर्हम व अन्त ख़ैरुर्-राहिमीन** — **और कहो: मेरे रब, बख़्श दे और रहम कर, और तू सब से बेहतर रहम करने वाला है।**'

बेटा, देखिए ये कितनी सादा है। कोई लंबी फ़ेहरिस्त नहीं। बस: **बख़्श दे, और रहम कर।**

और देखिए सूरह तुम्हें कहाँ ले आई। ये उन दस चीज़ों को नाम ले कर खुली जो एक मोमिन को कामयाब बनाती हैं — ख़ुशू', लग़्व से बचना, ज़कात, पाकीज़गी, अमानतें, हिफ़ाज़त की गई नमाज़ें। और ये ये तस्लीम करते हुए ख़त्म होती है कि उस सब के बाद भी, **एक बंदा आख़िर में जो माँगता है वो मग़्फ़िरत और रहमत है।**

बेटा, यही इस दीन का तवाज़ुन है: **यूँ काम करो गोया इसका दार-ओ-मदार तुम्हारी कोशिश पर है, और यूँ माँगो गोया इसका दार-ओ-मदार पूरी तरह उसकी रहमत पर है — क्योंकि वाक़ई है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'फ़लाह' एक किसान की कामयाबी है — मिट्टी तोड़ना, बोना, सब्र, कटाई। ये कमाई जाती है और ये बढ़ती है।

2. फ़ेहरिस्त इस से शुरू होती है कि तुम कैसे नमाज़ पढ़ते हो, उस से नहीं कि पढ़ते हो — ख़ुशू' पहली चीज़ है।

3. 'लग़्व' से मुँह मोड़ना — ख़ाली से, महज़ गुनाह से नहीं — हमारे दौर की सब से मुश्किल चीज़ है।

4. अपनी अमानतों और वादों पर चरवाहा बनो: अमानतदारी के बग़ैर कोई ईमान नहीं।

5. दो, और अपने दिल को काँपने दो कि क्या वो क़ुबूल हुआ — वो काँपना एक संजीदा मोमिन की निशानी है।

6. मरता हुआ आदमी ठीक उस चीज़ की भीक माँगता है जो तुम्हारे पास अभी है: नेक अमल करने का वक़्त।

7. यूँ काम करो गोया इसका दार-ओ-मदार तुम पर है, फिर यूँ माँगो जैसे रसूल ﷺ को सिखाया गया: 'रब्बिग़्फ़िर वर्हम व अन्त ख़ैरुर्-राहिमीन।'

रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम्-मुबारकंव्-व अन्त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन — या अल्लाह, हमें अल-फ़िरदौस अता कीजिए, और हमें बख़्श दीजिए और हम पर रहम कीजिए।

आमीन।